❖ अष्टम अध्याय

वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म, दर्शन

क – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में समाज

ख – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में संस्कृति

ग – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में अर्थव्यवस्था

घ – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में राजनीति

ङ – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में धर्म

च – वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में दर्शन

वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था ,राजनीति, धर्म, दर्शन

वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में तत्कालीन भारतीय समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म, दर्शन आदि की विशेषताओं का वर्णन महाकवियों द्वारा किया गया है। प्राचीन भारतीय समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म, चिकित्सा–पद्धति, आयुर्वेद, शिक्षा और दर्शन का सम्पूर्ण विश्व में विशिष्ट स्थान रहा है।

स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्स–राजचरितम् में तत्कालीन भारतीय नगरीय, ग्रामीण, आश्रमवासी समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म और दर्शन का यथार्थ, सजीव और सरल मार्मिक चित्रण किया है। इन रूपकों में वर्णित समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म और दर्शन का वर्णन इस प्रकार है।

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन–यापन, लोक–व्यवहार का विशिष्ट ढंग उसके कृत्यों, कथनों और क्रियाकलापों से स्पष्ट होता है। सभी उसे समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म और दर्शन से मिलती है। समाज, राजनीति, धर्म, अर्थव्यवस्था, संस्कृति तथा दर्शन संसार में उपलब्ध इन तत्त्वों से प्रत्येक जन–मानस का जीवन अवश्य ही प्रभावित होता है। मानव के चारित्रिक एवं सर्वागींण विकास और उन्नति के लिए इन सभी का ज्ञान होना परम आवश्यक है। फलस्वरूप इनके नियन्त्रण में रहकर ही वे विभिन्न क्रियाकलाप करते हैं। व्यक्तियों को समाज, राजनीति, संस्कृति, धर्म और दर्शन की कुछ बातें अनुकूल लगती हैं और कुछ प्रतिकूल। अनुकूल बातों के अनुसार व्यक्ति अपना व्यक्तित्व निर्धारित करता है। जबकि प्रतिकूल बातों को ग्रहण नहीं करता यहीं मानव की प्रकृति होती है।

स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराजचरितम् में वर्णित समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म और दर्शन की प्रमुख शिक्षाओं,विधाओं,व्यवस्थाओं और रीति रिवाजों, परम्पराओं का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है –

(क) वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में समाज

वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में समाज पर अत्यधिक प्रकाश कवियों ने नहीं डाला है। लेकिन रूपकों की कथा या कथावस्तु के आधार पर कुछ विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराजचरितम् आदि सभी रूपकों में वत्सराज उदयन को कौशाम्बी, उज्जयिनी का राजा कहा गया है। रूपकों में राजमहल, प्रासाद और अन्तःपुर की भव्यता का वर्णन है। इन रूपकों में राजमहल की आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था, अन्य व्यवस्था, परस्पर आपसी सम्बन्ध और राजकार्य का वर्णन है। कौशाम्बी, उज्जयिनी, कलिंग, वत्सदेश, पाञ्चाल, विन्ध्य, राजगृह आदि प्रमुख नगरों में राजा, रानियों, मंत्री, कञ्चुकीय, सेनापति, दास, सेवक, रानी की परिचारिकाएँ, कर्मचारी, व्यापारी, किसान, माली, मजदूर, निर्धन जनता निवास करती थी। समाज का एक वर्ग अत्यधिक सम्पन्न था तो दूसरा वर्ग अत्यन्त पिछड़ा एवं निर्धन था।[1]

समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी। सभी लोग स्त्रियों के प्रति सम्मान रखते थे और आदरपूर्वक व्यवहार एवं बातें करते थे। राजमहल के अन्तःपुर में स्त्रियाँ रहती थी। जिनका रक्षक वृद्ध ब्राह्मण अर्थात् कञ्चुकी होता था। राजा सम्पूर्ण राज्य में राज करता था। राजा उदयन अपनी प्रजा एवं जनता के प्रति एक समान व्यवहार करता था। उदयन के राज्य में अत्यधिक सम्पन्नता एवं समृद्धि थी।[2]

तत्कालीन समाज में माता–पिता का आदर व सम्मान करना, उनके आदेशों का पालन करना, आज्ञा पालन करना प्रमुख कर्त्तव्य था। जैसे– पद्मावती, सागरिका और आरण्यका अपने माता–पिता के आदेशों पालन करने के लिए कौशाम्बी आ जाती है। फिर राजा उदयन से विवाह करती है। राजाओं के मंत्री स्वामिभक्त, ईमानदार, आज्ञापालक और कर्त्तव्यनिष्ठ थे। राजा अपने मंत्रियों, कर्मचारियों, सेना तथा सेनापतियों से मित्रतापूर्ण व्यवहार करते थे। संगीत विद्या का ज्ञान भी लोगों को था । क्योंकि वसन्तऋतु में मदनमहोत्सव बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता था। राजा उदयन और वासवदत्ता को वीणा बजाना भी आता था।[3]

राजा का शासन पूरे राज्य अथवा देश में होने से वह राज्य का प्रधान होता था। समाज में यह शासन–व्यवस्था राजशाही या राजतन्त्र कहलाती है। इसमें सभी जनता राजा के अधीन होती है। समाज में जमींनदारी प्रथा, महाजनप्रथा, जागीरदारी प्रथा व्याप्त थी। नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में राजआज्ञा लागू होती थी। सभी ग्रामीण क्षेत्रों की प्रशासनिक व्यवस्था राजा के अधीन थी। लेकिन आश्रम और तपोवन में राजा का शासन नहीं चलता, वह मुनियों की तपस्या भूमि या तपस्थली होती है। इसलिए वहाँ की सभी व्यवस्था आश्रमवासियों द्वारा ही की जाती है। आश्रम में गुरू शिष्य परम्परा थी। ऋषि, मुनि, तपस्वी और शिष्य अनुयायी वन में कुटिया बनाकर रहते थे, जिसे आश्रम कहते हैं। आश्रम का जीवन सादा, सहज और सरल होता था। आश्रय में शिष्यों द्वारा गुरू की सेवा की जाती थी। विद्या अध्ययन सभी छात्र गुरूकूल में गुरूओं के सानिध्य में करते थे।[4]

समाज में नामकरण, विवाह और अन्त्येष्टि आदि सोलह या षोडश संस्कार विधि–विधान से सम्पादित किये जाते थे। तत्कालीन समाज में वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था और सोलह संस्कार प्रचलित थे।[5] मनुस्मृति का प्रभाव भी तत्कालीन समाज में था। समाज में बहुपत्नी विवाह प्रणाली भी प्रचलित थी। एक व्यक्ति की एक से अधिक पत्नियाँ होती थी। राजा उदयन का सभी रूपकों में दो विवाह होने का वर्णन है। राजा उदयन का प्रथम विवाह रानी वासवदत्ता से हुआ था। लेकिन दूसरा विवाह पद्मावती, रत्नावली और प्रियदर्शिका से होने का वर्णन मिलता है।[6]

रंगमंच में खेले जाने वाले नाटक सामान्य जन मानस में अत्यधिक लोकप्रिय थे। लोग इन नाटकों को उत्सुकतापूर्वक देखते थे। प्रियदर्शिका नाटिका में अन्तःपुर में एक नाटक खेला गया। जिसे सभी लोग अत्यन्त उत्साह और कौतुहल से देखते हैं। जो तत्कालीन समाज का मनोरंजन का साधन था। लोग मनोरंजन के लिए जादू, मदारी का खेल, साँड की लड़ाई आदि देखते थे।[7]

समाज के सभी वर्गों में राष्ट्रीय भावना और राजा के कल्याण की भावना थी। रूपकों के भरतवाक्य में राष्ट्रीय भावना और सर्वजन के कल्याण एवं खुशी की कामना की गयी है। यौगन्धरायण, रूमण्वान् जैसे मंत्रियों ने अपने राष्ट्र की रक्षा एवं स्वामी के कल्याण के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी। प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् में

मंत्री यौगन्धरायण ने अपने स्वामी राजा उदयन को सकुशल उज्जयिनी से लाने की प्रतिज्ञा की थी।[8]

रूपकों में पात्रों के माध्यम से विभिन्न प्रवृत्ति के व्यक्तियों के व्यक्तित्त्व का पता चलता है। जो तत्कालीन समाज की वेश–भूषा, रंग–रूप और भाषा के विषय में ज्ञान कराते हैं।

समाज में अनेक अच्छाईयाँ थीं परन्तु कुछ कुरीतियां भी थी। जैसे– कुछ लोग मदिरा पान करते थे। जुआ खेलना, पशु–पक्षियों का शिकार करना, दास प्रथा, ऊँच–नीच, भेद–भाव, वेश्यावृत्ति आदि कुरीतियाँ व्याप्त थी। नगरों में कुछ स्थानों पर वेश्यालय थे। मदिरालय और वेश्यालयों का वर्णन नगण्य है।[9]

(ख) वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में संस्कृति

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति प्राचीन काल से ही विभिन्नता में एकता के लिए सुप्रसिद्ध है। रूपकों में वर्णित संस्कृति में भी विभिन्नता में एकता दृष्टिगोचर होती है।

स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज में विभिन्न पात्रों ने अलग–अलग वस्त्र–आभूषण पहने हुए हैं। यह वस्त्र अनेक रंगों वाले अर्थात् रंग बिरंगे है। राजा, रानी, विदूषक, मंत्री, तपस्वी, सन्यासी, मुनि, दास–दासियों आदि सभी की वेष–भूषा अलग–अलग हैं। जैसे राजा राजर्षि वस्त्र व आभूषण पहनते है, और सन्यासी गेरूआ वस्त्र, रानियाँ अनेक आभूषण एव रत्नजड़ित साड़ियाँ पहनती थी। राजमहल में उत्सवों में विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाये जाते थे।[10] विदूषक द्वारा अनेक प्रकार के पकवान,व्यंजन और लड्डू खाने का वृत्तान्त है।[11]

तत्कालीन संस्कृति में कुलीन स्त्रियाँ ही शिक्षा प्राप्त करती थी लेकिन अन्य स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था। स्त्रियाँ गृहकार्य करती थी और वह व्यंजन बनाने, वस्त्र बनाने और घर की सजावट के कार्य में दक्ष थी। अन्य क्षेत्रों में कार्य करने की अनुमति उन्हें नहीं थी। सार्वजनिक स्थलों पर स्त्रियाँ कम ही जाती थी। नारी को समान अधिकार और स्वतन्त्रता की बात कही है।[12]

रूपकों की संस्कृति के अनुसार वसन्त ऋतु के आगमन पर कौमुदी महोत्सव या मदन महोत्सव मनाया जाता था। जिसमें महारानी एवं स्त्रियों द्वारा भगवान कामदेव की पूजा की जाती थी। फिर राजा की पूजा की जाती थी। इसके बाद सभी स्त्री–पुरूष मिलकर विभिन्न रंगों से होली खेलते हैं और नाचते गाते हैं। स्त्रियाँ पिचकारियों से लाल, पीला, नीला रंगों वाला पानी पुरूषों पर डालती थी। तत्कालीन संस्कृति एवं सभ्यता में विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा एवं अराधना करने के उदारहण भी रूपकों में मिलते हैं।[13]

राज्यों की राजधानी और नगरों का रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, ग्रामीण क्षेत्रों में रहन–सहन, खान–पान और रीति–रिवाज से अलग थे। लेकिन फिर भी कुछ समानता थी। समाज में अनेक लोकरीतियाँ, रूढ़ियाँ और लोक व्यवहार थे। अनेक परम्पराएं, लोक–कथाएं, लोक–गीत, लोक–नृत्य, रीति–रिवाज, वेश–भूषा, भाषा–शैली संस्कृति में थी।[14]

भारतीय संस्कृति में पतिव्रता नारीयों की अनेक गाथाएँ सुविख्यात हैं। राजा उदयन की धर्मपत्नी वासवदत्ता पतिव्रता नारी की साक्षात् मूर्ति है। वासवदत्ता ने राज्य कल्याण के लिए मंत्री यौगन्धरायण की योजना को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। जिससे राजा उदयन को खोया हुआ राज्य वापस मिल गया और वह चक्रवर्ती सम्राट बन गये।[15]

रूपकों में समुचित लोक व्यवहार और लोकरीतियों को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। राजा, मंत्री , विदूषक, स्त्री पात्रों और जनता के बीच के वार्त्तालाप से कुशल लोक व्यवहार एवं तत्कालीन लोकरीतियों ज्ञात होती हैं। नाटकों के सभी पात्र, राजा–रानी और अधम पात्रों ने समुचित लोक व्यवहार का उच्च आदर्श स्थापित किया है। लोक रीति, परम्परा, एवं लोक व्यवहार का उचित समन्वय रूपकों में है।[16]

रूपकों में स्थान–स्थान पर राजा के प्रति स्वामिभक्ति का भाव प्रदर्शित किया गया है। नाटकों में अनेक स्थानों पर आदर्श मित्रता, कर्त्तव्य परायणता, परस्पर सहयोग और नैतिक कर्त्तव्य के अनेक उदाहरण हैं।[17]

रूपकों में अनेक कलाओं का जैसे– चित्रकला, वीणा–वादन, नाट्यकला, युद्धकला आखेटकला, मूर्त्तिकला आदि वर्णन है। सागरिका द्वारा राजा उदयन का

चित्र बनाना फिर सुसंगता द्वारा सागरिका का चित्र बनाना। राजा उदयन और रानी वासवदत्ता का वीणा–वादन में निपुण होना। वसन्त उत्सव में अनेक नाटकों को रंगमंच में खेलना। अन्तःपुर में आरण्यका द्वारा नाटक खेलना। राजा उदयन, यौगन्धरायण, रूमण्वान् युद्धकला में निपुण थे। यह अनेक अस्त्र–शस्त्रों को चलाने की कला जानते थे।[18]

तत्कालीन भारतीय संस्कृति में जादू–टोना, अन्धविश्वास, भूत–पिचाश, मन्त्र–विद्या, ऐन्द्रजालिक विद्या, इन्द्रजाल, भविष्यवाणी, ज्योतिषविद्या आदि का अत्यधिक प्रभाव दिखायी देता था। रूपकों में अनेक स्थानों पर जादू–टोना, अंधविश्वास, मन्त्रविद्या, ऐन्द्रजालिक विद्या का वर्णन है। राजा उदयन को विष चिकित्सा का ज्ञान होना और मन्त्र विद्या से प्रियदर्शिका को स्वस्थ कर देना। रत्नावली में ऐन्द्रजालिक द्वारा विभिन्न आश्चर्यचकित कर देने वाले दृश्य प्रस्तुत करना। सिद्धेश्वर की भविष्यवाणी पर विश्वास करके मगध नरेश दर्शक रत्नावली को ब्राभ्रव्य के साथ उज्जयिनी भेज देते हैं। तापसवत्सराज में संन्यासी की भविष्यवाणी को सुनकर वत्सराज उदयन तापस वेश धारण करके राजगृह चले जाते हैं। प्रतिज्ञायौगन्धरायण में गिरिवन में नीले हाथी का सेना में परिवर्तित होना जादू ही है।[19]

रूपकों की संस्कृति एवं सभ्यता में ज्योतिष शास्त्र या ज्योतिष विज्ञान की छाप दिखायी देती है। सिद्धेश्वर महाराज को ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान था। रत्नावली की जन्म कुण्डली देखकर सिद्धेश्वर महाराज ने कहा इस कन्या से जो विवाह करेगा, वह चक्रवर्ती सम्राट बनेगा। लोग नक्षत्र, मंगल, अमंगल पर भी अधिक विश्वास रखते थे। स्वप्नवासवदत्तम् में चेटी सूचना देती है कि जल्दी करो, आज ही सुन्दर नक्षत्र है। आज ही कौतुक मंगल करने का समय है। ऐसी महारानी वासवदत्ता की आज्ञा है।[20]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तत्कालीन भारतीय संस्कृति सुसम्पन्न एवं विभिन्नता में एकता वाली थी। अनेक संस्कृतियों के मानने वाले लोग थे। जो अपनी तरह से रीति–रिवाजों, धर्म–कर्म, अंधविश्वासों पर आस्था रखते थे।

(ग) वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में अर्थव्यवस्था

किसी भी समाज की अर्थव्यवस्था उस स्थान के प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करती है। जिस देश या राज्य में जितने अधिक प्राकृतिक संसाधन, कुशल कारीगर, और उद्योग–धन्धे होगें, वह राज्य उतना ही सम्पन्न होगा। अर्थव्यवस्था का तात्पर्य है– **अर्थ + व्यवस्था।** अर्थव्यवस्था अर्थ और व्यवस्था दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसमें अर्थ का आशय है धन से या धन की उपलब्धता से है। व्यवस्था से आशय धन या अर्थ की व्यवस्था से है।[21]

स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज रूपक में कृषि ही अर्थव्यवस्था की रीढ़ थी। इन रूपकों में ग्रामीण क्षेत्रो और नगरों का वर्णन है। ग्रामीण क्षेत्रों से लागान के रूप में प्राप्त धन ही विकास एवं राज्य संचालन के लिए प्रयोग किया जाता था। युद्ध विजय पर प्राप्त होने वाला धन राजकोष, अस्त्र–शस्त्र और सेना पर व्यय किया जाता था।[22]

तत्कालीन भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी। कृषि उस समय का प्रमुख व्यवसाय था। लोग कृषि कार्य करके ही अपना जीवन–यापन करते थे। सभी उद्योग–धन्धे, व्यापार और कार्य–कलाप कृषि पर आधारित थे। कृषि ही आजीविका की प्रमुख साधन थी। लोग कृषि के साथ–साथ पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, पशु–व्यापार और कृषि सम्बन्धित व्यापार करते थे। वस्तु–विनिमय प्रणाली का भी प्रचलन था। इसमें दो गाँवों के लोग आपस में फसलों, वस्तुओं, दलहनों, कृषि योग्य उपकरणों, पशुओं,आवश्यक वस्तुओं का आदान–प्रदान करते थे ।[23]

तत्कालीन अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के क्रय–विक्रय की प्रणाली भी थी। दो व्यक्ति अपने–अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए परस्पर संसर्ग करते हैं। जैसे प्रतिज्ञायौगन्धरायण में एक को साड़ी से प्रयोजन रहता है, दूसरें को मूल्य से। क्रय–विक्रय से सम्बद्ध यह बिम्ब है कि एक व्यक्ति को समान चाहिए और दूसरे व्यक्ति को दाम चाहिए। इसी प्रकार संसार में लेन–देन का कार्यक्रम चलता है।[24]

कुछ बलिष्ठ लोग सेना में नौकरी करके अपनी आजीविका चलाते थे। युद्ध में विजय हो जाने पर प्राप्त धन, आभूषण, सैनिक और सम्पत्तियाँ आदि सभी राजा की हो जाती थीं। राजा जीते हुए धन और आभूषण को राजकोष में जमा कर देता

था। शेष धन को निर्धन जनता में बाँट देता था। जिससे राज्य की अर्थव्यवस्था सन्तुलित हो जाती थी।[25]

कुछ ग्रामीण और शहरी लोग कृषि कार्य में प्रयुक्त होने वाले उपकरण, कुटला, दराती, हल, बैलगाड़ी एवं अन्य औजार आदि का निर्माण करते थे। अस्त्र–शस्त्र भी कुशल कारीगरों द्वारा बनाये जाते थे। ये लोग औजारों, कृषि उपकरणों और अस्त्र–शस्त्र का मूल्य लेते थे। या इनके बदले अनाज लेते थे। तत्कालीन समाज आर्थिक दृष्टि से परिपक्व स्थिति में था। उस समय में राजा और प्रजा दोनों ही स्वर्ण और रजत के आभूषण पहनते थे। सामान्य परिवारों की स्त्रियाँ आभूषण के रूप में स्वर्ण, रजत ककणों (कंगन)को धारण करती थीं। रानियाँ एवं राजघराने की स्त्रियाँ स्वर्ण कंकण (कंगन), करधनी, कानों के आभूषण में पद्मरागमणि एवं बहूमूल्य हीरे–जवाहरात, रत्न धारण करती थी। समाज समृद्ध, विकसित एवं उन्नत अवस्था में था। राजा–रानी दासियों, सेवकों एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा शुभ समाचार सुनाने पर उन्हें हीरे–मोती, स्वर्ण के आभूषण, जवहारात, रत्नों को पारितोषिक के रूप में देते थे।[26]

(घ) वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में राजनीति

किसी भी राष्ट्र, देश और राज्य को जीवित रखने के लिए तथा उसकी समृद्धि, उन्नति के लिए उसके शासक अथवा राजा को राजनीति और कूटनीति के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान होना परम आवश्यक है। **''जीवों जीवस्य जीवनम्''** का न्याय सदा से ही अटल रहा है। देश, राज्य के संचालन की नीति और रीति को ही राजनीति कहते हैं। प्रत्येक शासक की शासन–व्यवस्था चलाने की नीति अलग–अलग होती है। किसी शासक की शासन व्यवस्था नीति अनुसार सफल होती है। और किसी की नीति असफल होती है। सफल राजनीति वह है जिसके अनुसार राजा प्रजा पर नियन्त्रण भी कर सके और उसे वात्सल्य भी दे सके।[27]

स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सचरितम् की कथावस्तु में राजनीति और कूटनीति स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

स्वप्नवासवदत्तम् में यौगन्धरायण राजा उदयन का राज्य आरूणि से वापस दिलाने के लिए राजनीतिक योजना बनाता है। मंत्री यौगन्धरायण का लावाणक

अग्नि की अफवाह फैलाना। फिर रानी वासवदत्ता को आश्रम में राजकुमारी पद्मावती के पास रखकर चला जाना। पद्मावती उदयन का विवाह कराना। यह सभी घटनाएँ यौगन्धरायण की कुशल रणनीति से ही सफल हो पायी। नाटक के अन्त में रानी वासवदत्ता और यौगन्धरायण राजा को सारी योजना चतुरता से बता देते हैं। इसलिए यौगन्धरायण को कुशल कूटनीतिज्ञ कहा गया है। स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में राजनीति, कूटनीति की अत्यधिक छाप दिखायी देती है।[28]

प्रतिज्ञायौगन्धरायण में राजनीतिक षड्यन्त्र स्पष्ट दिखायी देता है। राजा उदयन का राज्य अपने राज्य में मिलाने के लिए राजा दर्शक उदयन को षड्यन्त्र करके नीलगिरी वन में बंदी बना लेता है। यौगन्धरायण अपनी कूटनीतिक चालों से राजा उदयन को बन्दीगृह से मुक्त कराता है। उदयन वासवदत्ता का हरण करके उससे विवाह कर लेता है। यह नाटक पूर्णतः राजनीतिक एवं कूटनीतिक घटनाओं पर आधारित है। यौगन्धरायण एक कुशल रणनीतिज्ञ एवं कूटनीतिज्ञ है। इसलिए वह अपनी प्रतिज्ञा को राजनीति से पूरी कर लेते हैं।[29]

रत्नावली नाटिका में सागरिका अर्थात् रत्नावली कौशाम्बी यौगन्धरायण की राजनीतिक योजनानुसार आती है। यौगन्धरायण का सागरिका को अन्तःपुर में रखना एवं राजा और सागरिका में प्रेम होना। फिर अन्तःपुर में में आग लगना और सागरिका की रत्नावली के रूप में पहचान होना, सभी यौगन्धरायण की कुशल रणनीति की सफलता का श्रेष्ठ उदाहरण है। यौगन्धरायण द्वारा रहस्योद्घाटन करना एवं उदयन सागरिका विवाह राजनीतिक योजना का पूर्ण होना है। इसलिए इस नाटिका की कथावस्तु राजनीतिक योजना का पूर्ण होना है। इसलिए इस नाटिका की कथावस्तु राजनीतिक पृष्ठभूमि पर आधारित है।[30]

प्रियदर्शिका नाटिका में राजा उदयन और विन्ध्यकेतु युद्ध एवं उदयन कलिंग युद्ध दोनों ही युद्ध राज्य विस्तार एवं राजनीतिक वर्चस्व को दर्शाते हैं। इस नाटिका में भी राजनीति, कूटनीति और रणनीति का कुछ प्रभाव दिखायी देता है। प्रियदर्शिका और उदयन का विवाह भी राजनीतिक और कूटनीतिक कारणों से होता है, क्योंकि प्रियदर्शिका के पिता के राज्य में कलिंग ने आक्रमण करके उसे राज्य में मिला लिया था।[31]

तापसवत्सराज में राजा उदयन का तापसवेश धारण करना और राजा का तापस वेशधारी चित्रफलक देखकर पद्मावती का तापसी वेशधारण करना ये सभी घटनाएँ यौगन्धरायण की रणनीति से सफल होती है। तापस वेशधारी राजा उदयन और तापसी वेशधारी पद्मावती का विवाह भी यौगन्धरायण की रणनीतिनुसार होता है। नाटक के अन्त में राजा उदयन का प्रयाग में चिता में जलकर आत्महत्या करने का प्रयास। तभी वासवदत्ता और यौगन्घरायण से राजा उदयन का मिलन होना। यह सभी यौगन्धरायण की राजनीति और कूटनीति से सम्भव हो पाया है। इस नाटक में यौगन्धरायण, रूमण्वान् और लामकायन की राजनैतिक योजना सफल होती है।[32]

वत्सराज उदयन पर आधारित रूपकों की कथावस्तु में यौगन्धरायण की राजनीतिक एवं कूटनीतिक चाले ही दिखायी देती है। सभी रूपकों की कथा यौगन्धरायण की राजनीति, कूटनीति और रणनीति से ही आगे बढ़ती है।[33]

तत्कालीन भारतीय समाज में राजनीति का अत्यधिक प्रभाव था। उस समय भारतवर्ष में राजनैतिक उथल–पुथल अपने चरम पर थी। अधिकांश राजा अपनी राज्य रक्षा और राज्य विस्तार के विषय में योजना बनाते रहते थे। राजा पड़ोसी राज्य में टोह या नजरें लगाये रहते थे कि कब पड़ोसी राजा राज्य रक्षा के प्रति उदासीन हो और कब वे उस पर आक्रमण कर दे। भोग–विलास में रत वत्सराज उदयन पर आरूणि इसी प्रकार का आक्रमण करता है। मंत्री यौगन्धरायण, रूमण्वान्, विजयसेन, की सुरक्षात्मक युद्ध की तैयारियाँ भी तत्कालीन युद्ध प्रणाली की ओर संकेत करती हैं। विभिन्न प्रकार की योजनाओं में सफलता प्राप्त करना उनकी कुशल कूटनीति, रणनीति और राजनीति की ओर संकेत करती है। प्रत्येक रूपक के प्रारम्भ से लेकर अन्त में उदयन वासवदत्ता और उदयन पद्मावती, रत्नावली और प्रियदर्शिका मिलन की कथा से स्पष्ट होता है।[34]

उस समय प्रजा अत्यधिक कर्त्तव्य परायण थी। वह अपने प्रिय राजा एवं राज्य के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार रहती थी। मंत्री यौगन्धरायण, रूमण्वान्, लामकायन, विजयसेन, सांस्कृत्यायनी, कंचुकी, विदूषक और कोसलिक इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। राजाओं के आपस में आमने–सामने के युद्ध होते थे। ये युद्ध राजनीति के उदाहरण हैं। अतः सभी रूपक राजनीति पर आधारित हैं।

(ङ) वत्सराज उदयन पर आधारित प्रमुख संस्कृत रूपकों में धर्म

वत्सराज उदयन पर आधारित रूपकों में धार्मिक–आस्था और विश्वास का अत्यधिक प्रभाव दिखता है। स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, रत्नावली, प्रियदर्शिका और तापसवत्सराज में स्थान–स्थान पर धर्म की महत्ता प्रतिपादित की गई है। हिन्दू धर्म के रीति–रिवाजों, कर्म–काण्डों, यज्ञ–अनुष्ठानों, वेद–पाठ, पूजा–अर्चना, धार्मिक पर्वो और ऋतुओं पर आधारित उत्सवों का समाज में अत्यधिक प्रचलन था। भगवान् शिव–पार्वती, गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र आदि देवी–देवताओं का आर्शीवाद स्वयं कवियों ने मंगलाचरण में लिया है।[35]

उन दिनों बसन्त ऋतु में कामदेव उत्सव, मदन महोत्सव, कौमुदी महोत्सव में भगवान कामदेव की पूजा–अर्चना विधि–विधान से की जाती थी। ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, गणेश, शिव–पार्वती, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र आदि देवी–देवताओं के प्रति लोगों में अत्यधिक श्रृद्धा थी। लोग सभी देवी–देवताओं के मन्दिरों में पूजा–अर्चना करते थे, और पूजा अर्चना करने के लिए जल, दुग्ध, पुष्प, चन्दन, शहद, कपास, घी एवं विभिन्न पुष्पों का प्रयोग करते थे। गंगा, यमुना, भागीरथी तथा त्रिवेणी आदि पवित्र नदियों का महत्त्व बताया है। गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम प्रयाग या काशी को कहते हैं। प्रयाग तीर्थ में स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होने का उल्लेख है। लोग प्रयागराज को पवित्र तीर्थ स्थल मानते थे। इसलिए प्रयाग जैसे पवित्र तीर्थ स्थल पर लोग तीर्थ–दर्शन, तीर्थ–यात्रा एवं तीर्थ–स्नान अवश्य करते थे। राजा उदयन भी मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयाग जाते हैं। उस समय ब्राह्मणों, संन्यासी और भिक्षुओं को दान देने की परम्परा थी। तपस्वी, सिद्धपुरूषों और माहात्माओं का अत्यधिक सम्मान था।[36]

समाज में ब्राह्मण धर्म के प्रति आस्था और विश्वास था। कहीं–कहीं कुछ लोगों ने प्राणियों की भलाई के लिए बौद्ध धर्म धारण कर रखा था। बौद्ध भिक्षु भी बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार कर रहे थे। आश्रमों में मुनियों, ऋषियों द्वारा दो समय प्रातः और सायं काल में स्नान किया जाता था। ऋषि, मुनि और उनके शिष्य यज्ञ अग्नि प्रज्जवलित करके यज्ञ करते थे। यज्ञ में दी गयी आहुतियों को मन्त्र सहित तथा शुद्ध मन्त्रोच्चारण से युक्त होती थी। लोगों में वैदिक धर्म और जीवन पद्धति

के प्रति गहरी आस्था। समाज में नामकरण संस्कार, विवाह संस्कार, अन्येष्टि संस्कार आदि सोलह संस्कारों को पूरे विधि–विधान से किये जाने का उल्लेख है।[37]

राजा उदयन के चित्रफलक को मन्दिर में रखकर उसकी पूजा–अर्चना करना। उन्हें अर्ध्य देना तथा उनका अतिथि सत्कार करना सभी पद्मावती की धार्मिक प्रवृत्ति को प्रदर्शित करता है। वासवदत्ता का वियोग असहनीय होने पर राजा उदयन का ईश्वर से प्रार्थना करना। यह ईश्वर पर अटूट आस्था और विश्वास का उदाहरण है।[38]

इस प्रकार हम कह सकते है कि वत्सराज उदयन पर आधारित रूपकों में धर्म प्रभाव दिखायी देता है।

(च) वत्सराज उदयन पर आधारित रूपकों में दर्शन

वत्सराज उदयन पर आधारित रूपकों में भारतीय दर्शन का थोड़ा बहुत प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। स्वप्नवासवदत्तम् और प्रतिज्ञायौगन्धरायण में सांख्य दर्शन, योग और वेदान्त दर्शन का प्रत्यक्ष रूप से वर्णन तो नहीं किया गया है। किन्तु परोक्ष रूप से इनकी छाया इन रूपकों में दिखायी देती है। स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण एवं तापसवत्सराज में आश्रम में ऋषि, मुनि, ब्रह्मचारी और शिष्य योगाभ्यास करते हैं। प्रतिज्ञायौगन्धरायण में महाराज दर्शक का छोटा पुत्र व्यायाम या योगासन करने में रूचि लेता है। यह विद्या उसने गुरूकुल से सीखी है।[39]

स्वप्नवासवदत्तम् में रानी वासवदत्ता की मृत्यु का समाचार सुनकर दुःखी महाराज उदयन को मंत्रियों द्वारा समझाया जाता है कि महारानी की आत्मा अभी जीवित है। इसलिए वह पुनः मिल सकती है। यह सांख्य और वेदान्त दर्शन का बोध कराता है।[40]

प्रियदर्शिका और रत्नावली, तापसवत्सराज में बौद्ध धर्म या बौद्ध दर्शन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। प्रियदर्शिका के तृतीय अंक में बौद्ध भिक्षु का इधर–उधर घूमने का वृत्तान्त है। वह लोगों से भिक्षा मांग रहा है। इसलिए प्रियदर्शिका में बौद्ध–दर्शन की छाप दिखायी देती है। रत्नावली में भी बौद्ध भिक्षु द्वारा बौद्ध–धर्म के प्रचार–प्रसार करने का वर्णन है।[41]

तापसवत्सराज में रानी वासवदत्ता की मृत्यु से दुःखी होकर प्रयाग जाते हुए राजा उदयन ने देखा कि एक बौद्ध भिक्षु कुछ लोगों को बौद्ध धर्म की शिक्षा दे रहा है। बौद्ध भिक्षु बौद्ध धर्म के प्रचार– प्रसार करने के लिए देशाटन भी कर रहा है। बौद्ध दर्शन का तत्कालीन समाज में प्रभाव दिखायी देता है। कहीं कहीं यह वर्णन भी मिलता है कि लोग बौद्ध भिक्षुओं को दान या भिक्षा स्वरूप कुछ वस्तुओं एवं धन को दान में देते थे।[42]

प्रतिज्ञायौगन्धरायण में शैव दर्शन या सम्प्रदाय की झलक दिखती है। तृतीय अंक में विदूषक शिवचित्र के पास लड्डूओं को ढूढँता है। भगवान् शिव के चरणों में लड्डू मिलने से अत्यधिक प्रसन्न हो जाता है। इसी अंक में राजकुमारी वासवदत्ता का शिविका पूजा करने का वृत्तान्त या वर्णन है। अतः यहाँ शैव दर्शन है।[43]

स्वप्नवासवदत्तम् में कहा है कि भाग्य में सुख–दुःख का आना–जाना किसी पहिये के आरों का ऊपर–नीचे होने जैसा है। कवि भाग्य और भविष्य की ओर संकेत करता है।[44]

रत्नावली में सिद्ध पुरूष द्वारा भविष्यवाणी की गयी है कि इस कन्या अर्थात् रत्नावली से जो विवाह करेगा, वह चक्रवर्ती सम्राट बनेगा।[45]

तापसवत्सराज में राजा उदयन और पद्मावती का संन्यास धारण करना और दोनों का तापस एवं तापसी वेश धारण करना । मोक्ष प्राप्ति हेतु तापस वेश धारण करना सांख्य और वेदान्त दर्शन का बोध कराता है।[46]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्वप्नवासवदत्तम् एवं रत्नावली नाटिका
2. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, प्रथमः अंक और द्वितीयः अंक
3. रत्नावली नाटिका, स्वप्नवासवदत्तम् और प्रियदर्शिका से उद्धृत
4. स्वप्नवासवदत्तम् और तापसवत्सराजचरितम्,
5. स्वप्नवासवदत्तम्,तापसवत्सराजचरितम्, प्रियदर्शिका
6. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, चतुर्थः अंक,
7. प्रियदर्शिका तृतीयः अंक, रत्नावली तृतीयः अंक
8. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, प्रथमः अंक और तृतीयः अंक
9. तापसवत्सराजचरितम्
10. तापसवत्सराजचरितम्, द्वितीयः अंक, स्वप्नवासवदत्तम् प्रथमः अंक

11. स्वप्नवासवदत्तम् तृतीयः अंक
12. प्रतिज्ञायौगन्धरायण,
13. रत्नावली नाटिका, प्रथमः अंक, द्वितीयः अंक
14. तापसवत्सराजचरितम्
15. स्वप्नवासवदत्तम्, प्रथमः अंक, तापसवत्सराजचरितम् प्रथमः अंक
16. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, तापसवत्सराजचरितम्
17. प्रियदर्शिका
18. रत्नावली, प्रियदर्शिका
19. रत्नावली, स्वप्नवासवदत्तम्, तापसवत्सराजचरितम्
20. रत्नावली, स्वप्नवासवदत्तम्,
21. परीक्षा मंथन समान्य ज्ञान, अग्रवाल अनिल, पृष्ठ संख्या ७०५
22. स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, तापसवत्सराजचरितम्,
23. स्वप्नवासवदत्तम्, तापसवत्सराजचरितम्
24. प्रतिज्ञायौगन्धरायण
25. स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण,
26. स्वप्नवासवदत्तम्, रत्नावली, तापसवत्सराजचरितम्
27. स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, तापसवत्सराजचरितम्,
28. स्वप्नवासवदत्तम्,सम्पूर्ण अंक
29. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, सम्पूर्ण अंक
30. रत्नावली, सम्पूर्ण अंक
31. प्रियदर्शिका, सम्पूर्ण अंक
32. तापसवत्सराजचरितम्,सम्पूर्ण अंक
33.स्वप्नवास०, प्रतिज्ञायौग०, रत्नावली, प्रियदर्शिका तापसवत्स०, कथावस्तु
34. तापसवत्सराजचरितम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, प्रियदर्शिका
35. स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रत्नावली, तापसवत्सराजचरितम्,
36. तापसवत्सराजचरितम्, रत्नावली, स्वप्नवासवदत्तम्,
37. प्रियदर्शिका, तापसवत्सराजचरितम्,
38. तापसवत्सराजचरितम्,
39. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, द्वितीयः अंक
40. स्वप्नवासवदत्तम्, प्रथमः अंक,
41. प्रियदर्शिका, रत्नावली,
42. तापसवत्सराजचरितम्, द्वितीयः अंक
43. प्रतिज्ञायौगन्धरायण,
44. स्वप्नवासवदत्तम्, प्रथमः अंक,
45. रत्नावली, प्रथमः अंक,
46. तापसवत्सराजचरितम्, द्वितीयः अंक, तृतीयः अंक